डा0 राम मनोहर लोहिया के चिन्तन में विश्व व्यवस्था

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ.प्र.)

डॉ0 लोहिया भारतीय परम्परा एवं संस्कृति में विश्वास रखते थे आपका मानना था कि धर्म हमारी विचारधारा को और भी अधिक परिपक्व बनाता है। यह लोगों की विचारधारा गलत थी कि उनकी धर्म में अनास्था थी। जबकि उनका मानना था कि राम ,कृष्ण और शिव भारतीय सांस्कृतिक एकता का प्रतिनिधित्व करने वाले हैं। डॉ0 लोहिया की धर्म के प्रति अटूट आस्था का अनुमान इसी बात से लग जाता है कि चित्रकूट में शिवरात्रि के दिन आयोजित किया जाने वाला रामायण मेला उन्हीं की कल्पना का साकार रूप था जो आज भी अनवरत जारी है।

डॉ0 लोहिया हिन्दू–मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। डॉ0 लोहिया जानते थे कि भारत एक हिन्दू बहुल देश है किन्तु मुसलमानों की उपेक्षा नहीं की जा सकती। अतः डॉ0 लोहिया इस बिन्दु पर दोनों की एकता के पक्ष धर थे। डॉ0 लोहिया जानते थे कि दोनो की एकता में मजहब बाधक है। किन्तु दोनों की जीवन शैली एक जैसी है। डॉ0 लोहिया धर्म के वाह्यरूप को मिटाना चाहते थे। डॉ0 लोहिया उसके सार तत्व के ग्राहक थे। डॉ0 लोहिया ने हिन्दुओं से अपील की थी कि वे मुसलमानों को अपने जैसा ही समझें, उनसे किसी भी प्रकार का भेदभाव न रखें। मुसलमानों से भी उनका अनुरोध था कि भारत पर आक्रमण करने वाले तथा उसे लूटने वाले महमूद गजनवी और बाबर को न स्वीकार करके वे अकबर ,जायसी, और कबीर को अपना पितामह मानें। उनकी इच्छा भी कि हिन्दू मुस्लिम दोनों मिली जुली हिन्दुस्तानी विरासत को स्वीकार कर अपने को राम, कृष्ण, बुद्ध, अकबर, जायसी और दाराशिकोह का वंशज मानें, वे बाह्यआड्म्बर के बिलकुल खिलाफ थे। उनका विचार था हिन्दू मुसलमान को अलगाव करने वाले जो चिह्न हैं उन्हे समाप्त किया जाय। डॉ0 लोहिया मानते थे कि–''चोटी, दाढ़ी, जनेऊ बाहरी चिह्न हैं। किसी धर्म से इनका सम्बन्ध नहीं है। मनुष्य ने अपने इतिहास में कालान्तर में इन सब चीजों को ढूंढ़कर निकाला, अपने धर्म के बाहरी चिह्न बताने के लिए। इन बाहरी चिह्नों को तो खत्म किया जा सकता है और हिन्दू मुस्लमान को नजदीक लाने में कुछ सहायता मिलती है। आखिर जिस देश के आदमी की शक्ल देखने से पता चल जाए कि वह कौन धर्म का है, कौन जाति का है, कौन सूबे का है, तो वह देश एक हो कैसे पाएगा।''

भारत विभाजन पर लोहिया के विचार–उस समय की तमाम ऐसी घटनाओं और स्थितियों का जिनके प्रति एक आम भारतीय नागरिक के मन में बहुत स्पष्ट और तार्किक व्याख्या नहीं है। डा0 राम मनोहर लोहिया ने अपनी पुस्तक भारत विभाजन के गुनहगार में परत दर परत रहस्यों को खोला है। जिसमें बताया गया कि भारत का विभाजन किन कारणों से हुआ 1–ब्रितानी कपट 2–कांग्रेस नेतृत्व का आभाव 3–हिन्दू –मुस्लिम दंगों की प्रत्यक्ष परिस्थिति 4–जनता में दृढ़ता और सामर्थ्य का आभाव 5–गांधी जी की अहिंसा 6–मुस्लिम लीग की फूटनीति 7–आये अवसरों से लाभ उठा सकने में असमर्थता 8–हिन्दू अहंकार भी इसके पीछे प्रमुख तत्व रहे हैं।

डॉ0 लोहिया साम्प्रदायिकता की समाप्ति हेतु भाषा में भी सुधार करना चाहते थे। उनका कहना है कि 'उर्दू जबान हिन्दुस्तान की जबान है और उसका वही रूतबा होना चाहिए जो हिन्दुस्तान की किसी जबान का।' साम्प्रदायिकता के समाधान हेतु डॉ. लोहिया ने हिन्द–पाक महासंघ की कल्पना की थी। महासंघ के निर्माण के कुछ साधन भी डॉ0 लोहिया ने रखे। डॉ0 लोहिया द्वारा प्रस्तावित साधन वास्तव में एक आदर्श रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं। लेकिन इन साधनों के लिए भी जब तक ठोस साधन न हों तब महासंघ एक कल्पना रहेगा। डॉ0 लोहिया ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करते थे। मानव धर्म ही सच्चा धर्म है, ऐसा मानते थे, इसीलिए साम्प्रदायिक धर्मों की कटु आलोचना करते थे। उनका कहना था कि 'मानव को हिन्दू–मुस्लिम, सिक्ख–ईसाई आदि खास रिवाजों और समूहों में बंधे धर्मों के ऊपर उठकर अपनी दृष्टि को व्यापक बनाना चाहिए और निर्भयता के साथ–साथ मानव धर्म का सच्चा उपासक बनना चाहिए।'

डॉ0 लोहिया का मानना है कि चार बड़े ठोस सवालों वर्ण ,स्त्री, संपति और सहनशीलता के बारे में हिन्दू धर्म में बराबर उदारवाद और कट्टरता का रूख बारी–बारी रहा है। ..... कट्टरपंथियों ने अक्सर हिन्दू धर्म में एकरूपता की एकता की कायम करने की कोशिश की है। उनके उद्देश्य हमेशा संदिग्ध नहीं रहे। उनकी कोशिशों के पीछे अक्सर शायद स्थायित्व और शक्ति की इच्छा थी लेकिन उनके कामों के नतीजे हमेशा बहुत बुरे हुए। मैं भारतीय इतिहास का एक भी ऐसा काल नहीं जानता जिसमें कट्टरपंथी हिन्दू धर्म भारत में एकता या खुशहाली ला सका हो। जब भी भारत में एकता या खुशहाली आई तो हमेशा वर्ण, स्त्री, सम्पत्ति, सहिष्णुता आदि के सम्बन्ध में हिन्दूधर्म में उदारवादियों का प्रभाव अधिक था। हिन्दू धर्म के कट्टरपंथी जोश बढ़ने पर हमेशा देश सामाजिक और राजनीतिक दृष्टियों से टूटा है और भारतीय राष्ट्र में राज्य और समुदाय के रूप में बिखराव आया है। मैं नहीं कह सकता कि ऐसे सभी कुल, जिनमें देश टूटकर छोटे–छोटे राज्यों में बँट गया, कट्टरपंथी प्रभुता के काल थे, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि देश में एकता तभी आई जब हिन्दू दिमाग पर उदारवादी विचारों का प्रभाव था।'' हिन्दुस्तान का भविष्य चाहे जैसा भी हो हिन्दू को अपने आपको पूरी तरह बदलकर मुसलमान के साथ ऐसी रागात्मक एकता हासिल करनी होगी। सारे जीवों पर वस्तुओं की रागात्मक एकता में हिन्दू का विश्वास भारतीय राज्य को राजनीतिक जरूरत भी है कि हिन्दू मुसलमान के साथ एकता महसूस करे। इस रास्ते पर बड़ी रूकावटें और हारे हो सकती हैं लेकिन हिन्दू दिमाग को किस रास्ते पर चलना चाहिए वह साफ है।''

बौद्धिक स्वतंत्रता के समान ही डॉ0 लोहिया राज्य के धर्म निरपेक्ष चरित्र का समर्थन करते हुए प्रत्येक व्यक्ति की धार्मिक स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं लेकिन व्यक्ति के अधिकार का समर्थन करते हुए भी डॉ0 लोहिया उसके निरपेक्ष चरित्र को समर्थन करने के स्थान पर उसके समाज के सापेक्ष चरित्र का समर्थन करते हैं तथा यदि वह समाज के सापेक्ष चरित्र का समर्थन करते हैं तथा यदि वह शोषण और अन्याय का साधन बनती है तो उसे नियन्त्रित करने का राज्य को अधिकार प्रदान करते हैं। समता के मौलिक अधिकार को डा0 लोहिया ने सर्वाधिक महत्व प्रदान किया है । इस दृष्टि से उन्होंने वैधानिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में समानता के अधिकार का समर्थन किया। डा0 लोहिया अपने चिन्तन और कर्म की दृष्टि से भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में एक महत्वपूर्ण स्थान ही नही रखते बल्कि सभी भारतीय समाजवादियों में लोकतांत्रिक समाजवाद के एक मौलिक चिन्तक तथा उसकी स्थापना हेतु अदम्य प्रयत्न करने वालों में भी सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित हैं। उन्होने आजीवन समाज में व्याप्त

विभिन्न विषमताओं और अन्याओं के विरूद्ध संघर्ष तथा उनके उन्मूलन हेतु अथक प्रयत्न किया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ0 राममनोहर लोहिया के द्वारा 12 अप्रैल, सन् 1964 ई0 को भारत–पाकिस्तान महासंघ के विचार को प्रस्तुत करने वाला संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया था। जो निम्नलिखित है– हर नागरिक को स्वतंत्रता और सुरक्षा प्रदान करना भारत की एक पावन परंपरा है –"पूर्वी पाकिस्तान में बड़े पैमाने पर हुए दंगों ने 2 लाख से अधिक हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों को भारत आने पर मजबूर किया है। पूर्वी बंगाल में हुई घटनाओं से स्वाभाविक रूप से भारतीयों में उत्तेजना है। स्थिति को नियंत्रण में लाने और इस रोग के सही इलाज के लिए यह आवश्यक है कि इसका सही ढंग से निदान किया जाए। और मानसिक पीड़ा की इस दशा में भी हमारे राष्ट्रीय जीवन के बुनियादी मूल्य भुलाए नहीं जाने चाहिए। हमारा यह दृढ़ मत है कि पाकिस्तान के हिंदुओं और अन्य अल्पसंख्यकों के जीवन और संपत्ति की सुरक्षा की गारंटी देना भारत सरकार की जिम्मेदारी है। इस मामले में निरा कानूनी दृ ष्टिकोण लेते हुए यह कहना कि पाकिस्तान में रहने वाले हिंदू पाकिस्तानी नागरिक हैं, खतरनाक होगा और इससे दोनों देशों में कम या ज्यादा मात्रा में मार–काट और प्रतिहिंसा फैलेगी। जब भारत सरकार पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाने में असफल रहती है तो लोगों का क्रुद्ध होना स्वाभाविक है। जनता से हमारी अपील यह है कि वे अपना रोष सरकार पर प्रकट करें और किसी भी हालत में भारतीय मुसलमानों को उसका शिकार न बनाएँ। यदि जनता आपस में लड़ती है तो इससे सरकार को अपनी काहिली और असफलता छिपाने, जनता को बदनाम करने और उस पर जुल्म ढाने का मौका मिलता है। जहाँ तक भारतीय मुसलमानों का संबंध है, हमारा यह दृढ़ मत है कि अन्य सभी नागरिकों के समान, सभी परिस्थितियों में, उनके जीवन और संपत्ति की रक्षा की जानी चाहिए। कोई भी घटना या तर्क इस सच्चाई से समझौता करने को सही नहीं ठहरा सकते। एक राज्य, जो अपने नागरिकों को जीने के अधिकार की गारंटी नहीं दे सकता और ऐसे नागरिक, जो अपने पड़ोसियों की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकते, बर्बर ही कहलाएँगे। चाहे उसका धर्म कोई भी हो, हर नागरिक को स्वतंत्रता और सुरक्षा प्रदान करना वास्तव में भारत की एक पावन परंपरा रही है। इस संबंध में हम हर भारतीय मुसलमान को पुनः आश्वस्त करते हुए हर हिंदू घर में यह संदेश पहुँचाने की कामना करते हैं कि इस आश्वासन को पूरा करना उनका नागरिक और राष्ट्रीय कर्तव्य है।

डा0 राम मनोहर लोहिया का यह मानना था कि दो भिन्न देशों के रूप में भारत और पाकिस्तान का अस्तित्व एक कृत्रिम स्थिति है। दोनों सरकारों के संबंधों में मन–मुटाव असंतुलित दृष्टिकोण और टुकड़ों में बात करने की प्रवृत्ति का परिणाम है। दोनों सरकारों के बीच चलने वाला संवाद टुकड़ों में न होकर निष्पक्षता से होना चाहिए। ऐसी खुले दिल से होनेवाली बातचीत से ही विभिन्न समस्याओं का समाधान निकल सकता है, सद्भावना पैदा की जा सकती है और किसी प्रकार के भारत–पाक महासंघ बनाने की दिशा में शुरूआत की जा सकती है। डॉ0 लोहिया के मन में विभाजन के प्रति दुख और क्षोभ की भावना थी। उनके समक्ष कश्मीर के सन्दर्भ में सन 1948 ई0 तथा सन् 1965 ई0 में पाकिस्तानी सेनाओं ने आक्रामण किये। ऐसे विषादमय आक्रमण से बचने के लिए डॉ0 लोहिया हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की एकता के महान समर्थक थे। वह दोनों सरकारों से अधिक जनता से यह चाहते थे कि वह इस विषय में जागरूक होकर प्रयत्न करे क्योंकि उनकी दृष्टि में दोनों सरकारें गलत रास्ते पर चल रही हैं। वह नही चाहते थे कि दोनों राज्यों की निरीह जनता इस महाअपराध में अब अधिक दुख उठाये। सरकारें

यदि गलत दिशा में जाना चाहती हैं तब जनता का यह दायित्व हो उठता है कि वह आगे आकर यह कहे कि इस प्रकार की द्वेषपूर्ण नीति में बदलाव आना चाहिए।

डॉ0 लोहिया यह स्वीकार करते थे कि दोनों देशों की जनता का बहुत बड़ा भाग आज भी बिलय को मानसिक स्तर पर भी स्वीकार नही कर सका है। वह दोनों राज्यों के महासंघ में दोनों राज्यों के प्रतिनिधियों को स्थान देने की व्यवस्था रखते हैं। महासंघ में राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री का पद पाकिस्तान को देना चाहिए ,वह इस महासंघ के बीच ही काश्मीर को रखना चाहते हैं, चाहे उसका रूप स्वतंत्र हो या किसी भी राज्य के साथ वह सम्बद्ध रहे। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान तो एक ही धरती के अभी–अभी दो टुकड़े हुए हैं। अगर दोनों देशों के लोग थोड़ी भी विद्या–बुद्धि से काम करते चले गये तो दश पॉच वर्ष में फिर से एक होकर रहेंगे। मैं इस सपने को देखता हूँ कि हिन्दूस्तान और पाकिस्तान फिर से किसी न किसी इकाई मे बंधे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सिंह डॉ0 नामवर द्वारा मार्च 2010 को नई दिल्ली में आयोजित संगोष्ठी में दिये गये वक्तव्य पर आधारित
- त्रिपाठी अरविन्द–स्त्री मुक्ति : लोहिया की आवाज कथा क्रम, अप्रैल–जून 2011
- शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996
- भाटिया पी. आर. – भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र)
- कुमार आनन्द, कुमार,मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राम मनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013
- पाल डॉ0 ओमनाग–प्रमुख राजनीतिक विचारक एवं विचारधाराएँ, कमल प्रकाशन ,इंदौर (म.प्र.)
- मंत्री गणेश–मार्क्स, गाँधी और समसामयिक संदर्भ, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,नई दिल्ली
- सिंघवी लक्ष्मीमल्ल–साहित्य अमृत, संपादक,अक्टूबर 2007
- कथाक्रम–डॉ0 लोहिया–मार्क्स, गाँधी, सोशलिज्म–अक्टूबर–जून 2011
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–राममनोहर लोहिया–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- कपूर मस्तराम–डॉ0 राममनोहर लोहिया, वर्तमान संदर्भ में, अनामिका प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण : 2009
- शरण शंकर–विखंडन की संस्कृति, संपादकीय,जनसत्ता समाचार पत्र, 31 दिसंबर 2011
- पाठक नरेन्द्र–कर्परी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स–एक्स–11 नवीन शाहदरा दिल्ली–110032,प्र सं.2008
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009
- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाhधी

मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013

❖ लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास–चक्र (*Wheel of History*),लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,संस्करण :1992